चक्रव्यूह और आज का अभिमन्यु

श्रीमती बबीता चौधरी, टी जी टी हिन्दी
आर्मी स्कूल, रूड़की

प्रश्नचिन्हों का चक्रव्यूह, पल-पल दृष्टि में खींच लाता है,
उस महाभारत के दृश्य को, जिसमें, निहत्था अभिमन्यु
एक-एक कर सप्तरथियों से भिड़ता है
मौकापरस्त आदर्श योद्धाओं की बहादुरी का
सामना करते हुए कुरूक्षेत्र की युद्धभूमि में मरणासन्न पड़ा है

ये युगयुगीन अभिमन्यु अमूर्त है जो अपनी मृत्यु को मात दे आया है
हम सबके हृदय में बसा है वो या, हम सब ही उसका साया हैं

लड़ रहे है जो आज तक कहीं न कहीं कोई महाभारत
विचारों का समस्याओं का, परिस्थितियों का
अर्न्तचेतनाओं का अर्न्तबोधो का कितने चक्रव्यूह है यहाँ
जो घेरने को आतुर हैं फिर से हर अभिमन्यु को .....

बार-बार चक्रव्यूह प्रवेश होता है
पर हर बार अभिमन्यु ही क्यो पराजित होता है ? दोष किसा ?
क्या अभिमन्यु के अधकचरे कौशल का ?
या उन कलाकुशल महारथियों का,
जिन्हें परिस्थितियाँ एक साथ ले आयी ।
या फिर जो इस सबक सूत्रधार बन
संसार रथ का सारथी बना है
प्रश्नों पर प्रश्न ? ओर प्रश्न, और फिर प्रश्न चिन्ह ?
दृष्टि जहाँ तक जाती है, हर बार प्रश्न चिह्नों से घिर जाती है

उलझे-उलझे आर्वतों के बीच
जब-जब कोई दृष्टि दृष्टा की पा लेता है
हर प्रश्न का उत्तर स्वयं ही स्वयं ही सृष्टा बन जाता है ।